यूनिट 3 हिन्दुस्तानी संगीत में ताल की संकल्पना

सूचीपत्र

3.0 भूमिका

3.1 उद्देश्य

3.2 **संगीत में ताल**

3.3 **ताल निर्माण के सिद्धांत**

3.4 **ताल के दस प्राण**

3.5 **याद रखने योग्य मुख्य बातें**

3.6 प्रश्नावली

3.0 भूमिका

संगीत में ताल का एक महत्वपूर्ण स्थान है, कह सकते हैं कि सुर और ताल इन दो तत्वों से ही संगीत बनता है। हाँ ये कह सकते हैं कि सुर और ताल दोनों अलग अलग हो कर भी संगीत की रचना कर सकते हैं, पर यही सत्य है की ये दोनों ही संगीत के मूल उपदान हैं। विश्व संगीत से अलग भारतीय संगीत में ताल एक विशेष स्थान रखता है। संगीत को सही रूप से प्रस्तुत करने के लिए ताल के संबंध में अच्छी जानकारी और समझ होनी चाहिए। गायक वादकों में ये कहावत प्रचलित है कि 'सुर गया तो कुछ गया पर ताल गया तो सब गया'। अर्थात बेसुरा फिरभी **बर्दाश्त** किया जा सकता है पर बेताला बिल्कुल भी नहीं। एक परिपक्व गायक या वादक होने के लिए ताल पर अच्छी पकड़ होना बहुत ही जरूरी है। इस यूनिट में हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में ताल की अवधारणा को जानेंगे।

नोट –इस यूनिट में आप बार बार लय शब्द का उपयोग होते देखेंगे। लय का अर्थ एक नियमित गति है।

3.1 अधिगम के परिणाम

इस अध्याय को पढ़ने के बाद विद्यार्थी

- ताल क्या है ये समझ पाएंगे
- भारतीय संगीत में ताल की अवधारणा क्या है इसे समझा पाएंगे
- ताल के विभिन्न घटकों के बारे में बता पाएंगे
- ताल के दस प्राणों की व्याख्या कर पाएंगे

3.2 संगीत में ताल

ताल की परिभाषा - संगीत में ताल सांगीतिक समय और दूरी को मापने का साधन है जो मात्राओं और विभागों के समूह से बनता है।

संगीत में ताल सहज ही निहित होता है पर नियमों से नियंत्रित ताल कब और कैसे आया इसके बारे में अलग अलग काल के संगीत से सम्बन्धित शास्त्र, पांडुलिपियाँ और शिलालेख के माध्यम से कई शोध कार्य हुए हैं। अलग अलग संगीत शास्त्रियों ने इस पर अध्ययन किया है पर यह बात तो सर्वमान्य है कि अगर कण कण में लय मौजूद है तो संगीत में भी लय प्राकृतिक तौर पर ही मौजूद रही होगी। यह भी समझना चाहिए कि मानव सभ्यता का क्रमिक विकास के साथ साथ संगीत का स्वरूप बदला और भाषा और व्याकरण के बनने के साथ साथ संगीत का भी विकास हुआ होगा।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ताल का एक महत्वपूर्ण स्थान है तथा इसकी परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। ताल शब्द की उत्पत्ति 'तल' धातु से हुई है जिसका अर्थ है आधार। भारतीय शास्त्रीय संगीत में ताल को संगीत का आधार माना गया है। लय अर्थात गति तो अनादि है, अनंत है, जिसे ताल के द्वारा अनुशासन एवं नियंत्रण में बांध कर संगीतिकविधाओं में प्रयोग किया जाता है।

ताल सांगीतिक समय को मापने का मुख्य साधन है जो भिन्न भिन्न मात्राओं विभागों एवं ताली खाली से निर्मित विशेष बोल समूह होते है। वर्णों को उच्चारण करने के लिए व्यतीत समय के प्रति प्राचीन काल से ही ध्यान दिया गया और उच्चारण के लिए व्यतीत समय के अनुसार उन्हे ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत की संज्ञा दी गयी। इन तीन प्रकार के वर्णों के संयोजन से छंद का जन्म हुआ और विभिन्न छंदों के समायोजन से तालों की उत्पत्ति हुई। भारतीय संगीत में ताल आवृत्ती परक होता है। इस बात को हम ऐसे समझ सकते हैं कि - एक ताल यदि 10 मात्राओं का है तो वह 10 मात्राएं सम्पूर्ण होने का बाद वापस पहली मात्र पर आ जाती है जिसे हम सम कहते हैं और इस तरह गीत खत्म होने तक ताल की पुनरावृत्ति होती रहती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा दूसरी संगीत **शैलियों** में ताल संबंधी इस तरह की सोच नही पाई जाती, ये भारतीय संगीत की एक विशेष पहचान है। भारतीय संगीत में लय प्रकारों के बोल होते है जिन्हें हम ताल के ठेके के नाम से पुकारते हैं। इन ठेकों को खाली और ताली सहित हाथों पर प्रदर्शन करना भी भारतीय संगीत की एक खास बात है।

भारतीय संगीत में समान मात्राओं के अलग अलग तालों के अलग अलग ठेके भी है जिनका प्रयोग उन तालों की लय के अनुसार किया जाता है।इन तालों के प्रयोग के अपने नियम हैं। समान मात्राओं के अलग अलग तालों का निर्माण अलग अलग गायन वादन शैलिओं एवं उनके भाव, रस एवं लय को ध्यान में रख कर कर किया गया है।

अलग अलग तालों में प्रयुक्त बोलों से समान मात्राओं के तालों में भी अलग वजन, रस एवं अंदाज पैदा होता है। पर इन सब तालों के निर्माण एवं उनके ठेकों के बोलों के चयन के लिए सैध्दांतिक सोच एवं नियम आवश्यक हैं। बिना सैध्दांतिक नियमों के यह मुमकिन नहीं है।

ताल संबंधी पारिभाषिक शब्दावली

- **मात्रा** –गायन या वादन में व्यतीत समय को मापने की सबसे छोटी इकाई है मात्रा
- **विभाग**– ताल में विभाग महत्वपूर्ण होते हैं। ताल के छंद के अनुसार विभागों के अंतर्गत मात्राओं के छोटे छोटे समूहों से बाँटा जाता है जिस के कारण ताल की अपनी पहचान बनती है और एक ताल दूसरे ताल से अलग होता है।
- **सम** -ताल की पहली मात्रा सम कहलाती है।
- **खाली**–ताल मे वह स्थान जिसमे हाथ पर ताली नहीं बजाया जाता। अक्सर खाली में बायाँ नहीं बजता।
- **ताली** - ताल मे वह स्थान जिसमे हाथ पर ताली बजाया जाता है। अक्सर ताली में दायाँ और बायाँ दोनों बजते हैं।

ताल निर्माण के सिद्धांत

ताल निर्माण के सिद्धांतों में सर्व प्रथम जिस नियम का ज़िक्र आता है वह है :

संगीत शैली : तालका प्रमुख प्रयोजन संगीत में संगत करना ही है। ताल वाद्यों का एकल वादन का प्रचलन संगीत में बहुत बाद में हुआ। इसीलिए किसी भी ताल के निर्माण का पहला चरण यही हैकी उस ताल का निर्माण किस विधा अथवा गायन वादन शैली के साथ प्रयोग करने के लिए होना है यह तय करना। किसी गंभीर प्रकृति की शैली के लिये ताल के निर्माण में ठेके के बोलों का इस प्रकार से चयन किया जाना चाहिए ताकी वह विलम्बित लय के अनुरूप हो। बोलों में गंभीरता हो। चंचल एवं **श्रृंगार** रस की **शैलियों** के लिए मात्राओं की संख्या कम हो एवं बोलों का चयन इस तरह से हो तेज लय में ठेका आसानी से बजाया जा सके। ताल के निर्माण के लिए बोलों के चयन में गायन वादन **शैलियों** का भी ख्याल रखना अति महत्वपूर्ण है। ख्याल गायकी में विलम्बित, द्रुत, मध्य लय एवं तरानों में प्रयुक्त तालों के निर्माण नियम ध्रुपद, धमार, ठुमरी इत्यादि के तालों से अलग होगें। तीन ताल एवं एक ताल जैसे ताल विलम्बित, द्रुत एवं मध्य लय में एक समान प्रयोग होते है। समान मात्रा संख्या और **मात्राओं** के विभाग, तथा खाली – ताली भी एक जैसे होने के बावजूद दो ताल एक दूसरे से बोलों के कारण प्रकृति में भिन्न हो जाते हैं और इसीलिए भिन्न विधाओं में प्रयोग कीये जाते हैं। जैसे एक ताल एवं चार ताल या चौताल के मात्रा समान होने पर भी इनके वादन से उत्पन्न रस एक दूसरे से भिन्न है। इनके बाज, प्रोयोग की जाने वाली विधाएं और वाद्य भी भिन्न है। एकताल तबले पर बजाई जाती है तथा खयाल के साथप्रयुक्त होता है जब की चौताल पखावज पर ध्रुपद के संगत में बजाई जाती है। इसी के कारण श्रोताओं पर इन दोनों तालों का अलग अलग असर होता है। धमार , दीपचंदी एवं आड़ा चौताल समान मात्राओं के होने के बावजूद इनके निर्माण में प्रयोग बोलो के कारण इनमे अलग अलग रस पैदा होता है जिसके कारण इनका प्रयोग अलग अलग विधाओं की संगत मे अलग अलग वादन **शैलियों** और वाद्यों के साथ होता है। शास्त्रीय संगीत के अलावा सुगम और लोक संगीत की संगत के लिए भी ताल वाद्य और वादन शैली भिन्न होते हैं।

मात्रा : ताल की सबसे छोटी इकाई है मात्रा। यह ताल का महत्वपूर्व अंग है। ताल की मात्राओं को संगीत शैली के अनुरूप निर्धारित किया जाता है। गंभीर प्रकृति की **शैलियों** में प्रयुक्त तालों में मात्राओं की संख्या अधिक होती है जबकि सौन्दर्य एवम श्रृंगार रस के लिए एवं हास्य रस से लिए प्रयुक्त तालों में कम मात्राओं का प्रयोग होता है। मात्राओं के निर्धारण में बोलो का निर्धारण भी शैली के अनुसार ही होता है। गंभीर तालों के बोल खुले एवं ज़ोरदार होते है जबकि **श्रृंगार** रस में प्रयुक्त तालों मे कर्णप्रिय एवं मधुर बोल युक्त संगतियों का प्रयोग होता है।

ताल के ठेकों के निर्माण में खाली, ताली एवं विभाग भी ताल के अनुरूप ही होने चाहिए। तालों के निर्माण में कम से कम दो विभाग और एक ताली एवं एक खाली का नियम है किन्तु कुछ तालों में इसका अपवाद है। हर एक ताल की पहली मात्र पर ताली होती है किन्तु रूपक इसका अपवाद है जिसके सम पर खाली है। अधिकतर तालों की खाली ताल के मध्य में रखी जाती है एवं विभाग की शुरुआत व्यंजनात्मक बोल से होती है। ताल के बोलों को प्राचीन ग्रंथों मे पाटाक्षर कहा गया है।

ताल के दस प्राण

ताल के संकल्पना में कुछ अन्य कारकों का महत्वपूर्ण योगदान है जिन्हें ताल के दस प्राण भी कहा जाता है।

1. काल : काल का शाब्दिक अर्थ समय है। समय अनंत काल से अखंडित है किन्तु मनुष्य ने हर काल खंड में अपनी सुविधा अनुसार इसे खण्डों में बाँट दिया। घड़ी, पल, पहर, दिन, रात, घंटा, सप्ताह, मास, वर्ष, दशक एवं शताब्दी आदि अलग अलग आकार के समय खंड हैं। संगीत में समय को मापने के लिए ताल रचना में सबसे महत्वपूर्ण तत्व काल है जो ताल की अवधि एवं लंबाई निश्चित करता है। ताल रचना में काल निर्धारण सर्वप्रथम कार्य होता है क्यूंकि ताल की अवधि और लम्बाई इस के द्वारा निश्चित होती है।

2. मार्ग : मार्ग का अर्थ रास्ता अथवा पथ होता है। किसी भी ताल का प्रथम मात्रा से अंतिम मात्रा तक का सफ़र जिस पद्धति से पूर्ण होता है वह मार्ग कहलाता है। इस मार्ग के मुख्य अंग हैं ताल के विभाग, ताली एवं खाली से जिस से ताल का एक आवर्तन बनता है।

3. **क्रिया** : हाथों के प्रदर्शन से ताल की स्थिति एवं विशेष स्थान का बोध करने वाली क्रिया ताल का महत्वपूर्ण अंग है। यह क्रिया दो प्रकार की होती है : 1. सशब्द क्रिया 2. निशब्द क्रिया

   - सशब्द क्रिया : जब ताल की किसी विशेष मात्रा पर दोनों हाथों का प्रयोग कर ध्वनी उत्पन्न की जाती है तब इसे सशब्द क्रिया का नाम दिया जाता है।

   - निशब्द क्रिया **:** जब तालकी किसी विशेष मात्रा पर हाथ हिलाकर शून्य अथवा रिक्तता से भाव प्रदर्शित किया जाए तो यह क्रिया निशब्द क्रिया कहलाती है।:

   सशब्द और निशब्द क्रियाओं का प्रयोग दक्षिण भारतीय संगीत में विशेष रूप में देखने को मिलता है। उत्तर भारतीय संगीत में ताली और खाली सशब्द और निशब्द क्रियाएं हैं।

4. **अंग : किसी** भी वस्तु के अलग अलग हिस्से अलग अलग सामग्री से बनते हैं। ताल के भी इसी प्रकार अलग अलग अंग होते हैं। ताल की मात्राएँ, ताली, खाली एवं विभागों को ताल के अंगों की संज्ञा दी गई है।

5. **ग्रह** :ग्रह का अर्थ ग्रहण करने से है।ताल का वह स्थान जहाँ से क्रिया अर्थात रचना प्रारम्भ होती है, उसे ग्रह कहते हैं। यह मुख्यतः दो प्रकार की हैं :

   - सम ग्रह : ताल की क्रिया या रचना जब सम अर्थात ताल की प्रथम मात्रा से आरम्भ होती तो इसे सम ग्रह कहते हैं।

   - विषम ग्रह : ताल की क्रिया या रचना जब सम अर्थात ताल की प्रथम मात्रा से आरम्भ न होकर किसी अन्य मात्रा से आरम्भ होती तो इसे विषम ग्रह कहते हैं।

   विषम ग्रह के दो प्रकार हैं।

   अतीत ग्रह एवं अनागत अथवा अनाघात ग्रह।

   अतीत ग्रह में ताल क्रिया सम अर्थात ताल की प्रथम मात्र के बाद आरम्भ होती है।

   अनागत अथवा अनाघात ग्रह में क्रिया सम अर्थात ताल की प्रथम मात्रा के पहलेशुरू होती है।

6. **जाति:** संगीत में प्रयुक्तहोने वाले तालों बोलों एवं अन्य रचनायों के लय, लयकारी प्रकार एवं छंदात्मक आकार ही जाति का निर्धारण करते हैं । नाट्यशास्त्र एवं संगीत रत्नाकर के अनुसार दो ही जातियां थी –तिस्र एवं चतस्र। इन ग्रंथों में देशी तालों की 5 जातियों का वर्णन संक्षेप में मिलता है। संगीत दर्पण में 5 जातियों का वर्णन है जिसमे तिस्र की तीन मात्राएँ, चतुस्र की चार, खंड की पांच, मिश्र की सात एवं संकीर्ण जाति की नौ मात्राएँ हैं। ताल के अपने विभागों में मात्राओं के आवंटन से भी जातियों का निश्चय करते हैं। तीन-तीन मात्राओं के विभाग की तालों को मिश्र जाति की ताल कहा जाता है जिसके उदाहरण दादरा ताल है जो छह मात्रा की है तथा इसके दो विभाग तीन तीन मात्र के हैं। चतस्र जाती में तिलवाड़ा एवं तीनताल जैसी तालें है जिसके चार चार विभाग चार चार मात्राओं से निर्मित हैं। झपताल खंड जाति का ताल है जिसका पहला और तीसरा विभाग दो दो मात्राओं का एवं दूसरा और चौथा विभाग तीन तीन मात्राओं का है। मिश्र जाति में दीपचन्दी, झूमरा आदि तालें है जिसका पहला और तीसरा विभाग तीन तीन मात्राओं का एवं दूसरा और चौथा विभाग चार चार मात्राओं का है।

7. **कला :** ताल के इस प्राण के बारे में विश्वास से कहना कठिन। प्राचीन तालों में कला का प्रयोग अलग अलग स्थानों पर अलग अलग अर्थों में हुआ है। सशब्द और निशब्द क्रियाओं को भी कला कहा जाता था।

8. **लय :** गायन, वादन एवं नृत्य में ताल की गति मापने की साधन है लय। संसार में प्रत्येक वस्तु की अपनी एक लय है। सभी अपने नियत अर्थात बंधी हुई गति से चलती है। एक बीज से पूरा पौधा बनना, नदी का बहना, पत्तों का हिलना और गिरना, हवा का बहना, प्राणियों का सांस लेना और चलना, हृदय का धड़कना, रात दिन का चक्र अथवा अथवा ऋतुओं का चक्र,पृथ्वी पर होने वाले भौतिक अथवा रासायनिक बदलाव यह सब किसी न किसी निरन्तरता का ही नतीजा है जो लय अथवा गति के कारण है। संगीत में लय के वजह से ही ताल अपना आवर्तन निश्चित समय में पूरा करती है।**लय ताल की मात्राओं के बीच के अंतराल की समान गति को कहते हैं।**

   शास्त्रों में लय को तीन प्रकार का माना गया है- विलंबित, मध्य एवं द्रुत ।

   - विलंबित लय : विलंबित शब्द विलम्ब का प्रतीक है। विलम्ब का अर्थ है देर से। जब ताल की एक मात्रा से दूसरी मात्रा का कालांतर ज्यादा हो अर्थात एक मात्रा से दूसरी मात्रा तक जाने में अधिक समय लगे तो इस गति/लय को विलंबित कहेंगे।

   - मध्य लय : यह लय सामान्य है जो न तो अधिक धीमी अर्थात विलंबित एवं न ही अधिक तेज गति में होती है। इस लय में दो मात्राओं के मध्य का काल खण्डविलम्बित लय की अपेक्षा आधा होता है।

   - द्रुत लय : यह लय साधारणतया सामान्य अर्थात मध्य लय से दुगुनी तेज़ एवं विलंबित लय से चारगुना तेज होती है। इस लय में दो मात्राओं के बीचका कालांतर मध्य लय से आधी एवं विलंबित लय से चौथाई होती है।

9. **यति** : ताल के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले बोलों की गति के भिन्न भिन्न प्रकारों को यति कहते हैं।प्राचीन ग्रंथों में तीन प्रकार की यति –समा, स्त्रोतागता एवं गोपुच्छा का उल्लेख मिलता है। बाद में मृदंगा एवं पिपलिका यतिओं को भी जोड़ा गया।

10. प्रस्तार: प्रस्तार का अर्थ विस्तार है। भारतीय संगीत में प्रस्तार एवं विस्तार का महत्वपूर्ण स्थान है। रागों, तालों, तालों में प्रयुक्त रचनाओं, बंदिशों एवं गायन वादन की विभिन्न विधायों में राग में अलग अलग तरीकों से स्वर एवं ताल के बोलों एवं रचनाओं का विस्तार किया जाता हैं । यह विस्तार अथवा प्रस्तार कलाकार के शिक्षण एवं उसकी सृजनात्मक सकती का मिश्रण होता है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत को हर पल नूतन ,नवीन एवं तरोताज़ा बनता है।

याद रखने योग्य मुख्य बातें:

- ताल सांगीतिक समय को मापने मुख्य साधन है जो भिन्न भिन्न मात्राओं विभागों एवं ताली खाली से निर्मित विशेष बोल समूह होते हैं ।
- मात्रा, विभाग, खाली और ताली ताल के मुख्य अंग होते हैं।
- ताल के तीन प्रकार का लय होते हैं - विलंबित, मध्य और द्रुत।
- गायन या वादन के विधा पर ताल की उपयोगिता निश्चित की जाती है।
- अलग अलग ताल वाद्यों का प्रयोग अलग किस्म के संगीत के लिए प्रयुक्त होता है और उसके लिए पाटाक्षर या बोल भी अलग होते हैं।

- मात्राओं की संख्या, विभागों,खालीतथा तालीकी विभिन्न समायोजन से ताल की अपनी पहचान बनती है।
- ताल की संकल्पना में कुछ अन्य कारकों का महत्वपूर्ण योगदान है जिन्हें ताल के दस प्राण भी कहा जाता है; वे हैं - काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाती, कला, लय , यति, प्रस्तार।
- लय ताल की मात्राओं के बीच के अंतराल की समान गति को कहते हैं जो तीन प्रकार का माना गया है- विलंबित, द्रुत एवं मध्य।
- ताल के विभागों में मात्राओं के आवंटन से जाति निश्चित की जाती है। ताल की चार प्रकार की जातियाँ हैं – तिश्र, चतुरश्र या चतश्र, खंड और मिश्र।
- ताल के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले बोलों की गति के भिन्न भिन्न प्रकारों को यति कहते हैं।प्राचीन ग्रंथों में तीन प्रकार की यति –समा, स्त्रोतागता एवं गोपुच्छ का उल्लेख मिलता है। बाद में मृदंगा एवं पिपलिका यतिओं को भी जोड़ा गया

प्रश्नावली

1. रिक्त स्थान भरें/ उत्तर दें :
   - i) संगीत में काल मापने की इकाई को _____ कहते हैं।
   - ii) ताल के प्राणों में क्रिया कितने प्रकार की होती है ?
   - iii) ताल के कितने प्राण है ?
   - iv) ताल के मुख्य अंग कितने है ?
   - v) लय के _____प्रकार है।
   - vi) द्रुत लय की गति मध्य लय से _____ होती है।
   - vii) निशब्द क्रिया के कितने प्रकार हैं ?
   - viii) सशब्द क्रिया के कितने प्रकार हैं ?
   - ix) डमरू यति में ताल के मध्य में लय _____ होती हैं।
2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दें -
   - i) समायति का क्या अर्थ है ?
   - ii) ताल के मुख्य अंगों के नाम लिखो।
3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार में दें :
   - i) ताल के निर्माण के में सहायक तत्वों का वर्णन करें।
   - ii) ताल के कितने प्राण है ? किन्ही पांच का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
   - iii) यति, लय, जाति एवं अंग से क्या अभिप्राय है ? विस्तार से समझायें।